समर्पण

परम पूजनीय, प्रातः स्मरणीय, परो-
पकार परायण, गांभीर्यादि गुण
गणालंकृत, साध्वीशिरोमणि
श्री सुवर्णश्रीजी
(श्री सोहनश्रीजी)
के करकमलों
में
सादर समर्पित।

सूचना ।

हमारे श्वेताम्बर संप्रदाय में श्री जिनदर्शन, पूजन और सामायिक आदि विषयों के हस्तलिखित और छपे हुए अनेक बड़े २ ग्रंथ मौजूद हैं। परंतु साधारण पढ़े लिखे मनुष्यों को बड़े २ ग्रंथों का पढ़ना और समझना बहुत कठिन मालूम होता है, और इसी कठिनाई के कारण बहुत से भाई और बहिनें इच्छा होते हुए भी सामायिक वगैरः नहीं सीख पाते। साधारण पढ़े लिखे भाई बहिनों को भी सामायिक की विधि सुगमता से समझ में आजाय और थोड़े से परिश्रम में ही वे इसको कण्ठस्थ कर सकें। इसी अभिप्राय और श्रीमती सोहन भाजी के उपदेशानुसार यह छोटी सी पुस्तक पाठकों के सन्मुख रखने का साहस किया गया है।

हमारे भाई और बहिन यदि इस पुस्तक से कुछ भी लाभ उठावेंगे तो मैं अपना अहोभाग्य समझूंगा।

—प्रकाशक.

श्रीसामायिक विधि

आदिमं पृथ्वीनाथ मादिमंनिष्पारिग्रहम् ।
आदिमं तीर्थनाथंच ऋषभस्वामिनंस्तुमः

जो इस अवसर्पिणी काल में पहिला ही राजा, पहिला ही त्यागी मुनि और पहिला ही तीर्थंकर हुआ है, उस श्रीऋषभदेव स्वामी की हम स्तुति करते हैं।

श्रावक को चाहिये कि प्रभात समय चार घड़ी रात्रि रहते निद्रा को त्याग दे

और अपना स्वर देख कर बिस्तरे पर से उठे। यदि दाहिना स्वर चलता हो तो प्रथम दाहिना और यदि बांयां स्वर चलता हो तो प्रथम बांयां पैर भूमि पर रक्खे। पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके श्रीनवकार मंत्र का स्मरण करे। इसके पश्चात् लघुशंका आदि से निवृत्त होकर पवित्र जल से अपने हाथों, पैरों को धोवे और शुद्ध सफेद धोती पहिन कर एकान्त स्थान में निम्न लिखित रीति से सामायिक करे।

प्रथम चरवले से भूमिकी प्रमार्जना करे फिर चौकी अथवा ठवणी पर स्थाप–

नाचार्यजी अथवा पुस्तक या नवकरवाली [माला] की स्थापना करे। उस ओर दाहिना हाथ करके तीन नवकार पढ़े।

अथ नमस्कार मंत्र।

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं। एसो पंच णमुक्कारो; सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणंच सव्वेसिं; पढ़मं हवइ मंगलं॥

इस प्रकार स्थापना करके आसण को एक तरफ रख बांयें हाथ में चरवला और दाहिने हाथ में मुखवस्त्रिका [एक

बालिस्त चार अंगुल लम्बे चौड़े आकार का सफेद वस्त्र] लेकर दो वेर खमास-मण देवे ।

खमासमण सूत्र ।

इच्छामि खमासमणो, वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि ।

इस प्रकार दो खमासमण देकर आचार्य महाराज के शरीर संवंधी सुख-साता पूंछने के हेतु कुछ झुककर खड़ा हो और यह पाठ बोले—

इच्छकार भगवान सुहराई सुहदेवसी

मुखतप शरीर निराबाध सुख संयम यात्रा निर्वहते होजी। स्वामी शाति हैजी

फिर एक खमासमण देकर दोनो पैर मोड़कर बैठे। दोनों जांघों के बीच आगे की ओर चरवला रखकर दाहिने हाथ पर मस्तक झुकाय बांयें हाथ से मुख वस्त्रिका मुख के आगे रखकर अब्भुट्ठिया का पाठ बोले।

अब्भुट्ठिया सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन, अब्भुट्ठिओमि अभ्यंतर देवसिअं खामेउं इच्छं खामेमि देवसिअं। जं किंचि

अपत्तिअं, पर पत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणये, वैयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतर भासाए, उवरि भासाए, जंकिंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वाबायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा-मि दुक्कडं ॥

यह बोल एक खमासमण देवे और कहे—

''इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं'

फिर ''इच्छं'' कहकर एक खमा-समण देवे। उकडूं बैठकर मुखपत्ति

पड़िलेहण करे। उस समय निम्न लिखित पचीस बोल चिन्तवन करे।

मुखपत्ति के २५ बोल

१ सूत्र अर्थ सर्दहूं, २ सम्यक्त्व-मोहनीय. ३ मिथ्यात्वमोहनीय, ४ मिश्र मोहनीय परिहरूं। ५ कामराग, ६ स्नेह-राग, ७ दृष्टिराग परिहरूं। ८ ज्ञान-विराधना, ९ दर्शनविराधना १० चरित्र-विराधना परिहरूं। ११ मनोगुप्ति, १२ वचनगुप्ति, १३ कायगुप्ति आदरूं। १४ मनोदण्ड, १५ वचनदण्ड, १६ काय-दण्ड परिहरूं। १७ सुगुरु; १८ सुदेव,

१६ सुधर्म आदरूं। २० कुगुरु, २१ कुदेव, २२ कुधर्म परिहरूं। २३ ज्ञान, २४ दर्शन, २५ चारित्र आदरूं।

इसके पश्चात खड़ा होवे और एक खमासमण देकर कहे इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन सामायिक संदिस्साबुं" फिर 'इच्छं' कहकर एक खमासमण देवे और कहे "इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन सामायिक ठाउं" फिर "इच्छं" कह अर्द्धनम् खड़ा होकर तीन नवकार पढ़े। फिर खमासमण देकर अर्द्धनम् खड़ा होकर कहे 'इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन पसायकरी सामा-

यिक दण्ड उच्चरावोजी ।" इतना कह तीनवार सामायिक सूत्र का उच्चारण करे । *

---

* श्रीहरिभद्रसूरि कृत आवश्यक बृहद्-वृत्ति, २ पूर्वाचार्य कृत आवश्यक चूर्णि:, ३ बर्धमान सुरि कृत आचार दिनकर ४ हेमचंद्रा-चार्यकृत योगशास्त्रवृति:, ५ अभयदेवसूरिकृत कथाकोषग्रन्थ पंचाशक वृति:, ६ विजयसिंहा चार्यकृत श्रावक प्रतिक्रमण चूर्णि:, ७ समय सुन्दरोपाध्याय कृत समाचारी शतक इत्यादि अनेक ग्रंथों में श्रावक को सामायिक लेते समय पहिले करेमि भंते और पीछे इरियावाहि करना बताया है ।

सामायिक सूत्र ।

करेमिभंते, सामाइयं, सावज्ज जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्सभंते, पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

फिर एक खमासमण देवे और कहे ।

इरिया वहियं सूत्र

इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन, इरियावहियं पडिक्कमामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कामिउं इरिया वहियाए

विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया- एगिं-दिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ-ठाणं, संकामिया, जीवियाओववरोविया, तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी सूत्र ।

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित

करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउसग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय निसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्जमे काउसग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणंन पारेमि

ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

यह पाठ बोल कर एक लोगस्स अथवा ४ नवकार का कायोत्सर्ग करे । पीछे णमो अरिहंताणं कहकर कायोत्सर्ग पारे और मुख से प्रगट एक लोगस्स कहे ।

अथ लोगस्स ।

लोगस्स उज्जो अगरे,
धम्म तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्त इस्सं,
चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

उसभमजिअंच वंदे,
संभवमभिणंदणं च सुमइंच।
पउमप्पहं सुपासं,
जिणं च चन्दप्पहं वंदे॥ २॥

सुविहिं च पुप्फदंतं,
सिअल सिज्जंस वासु पुज्जं च।
विमल मणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि॥ ३॥

कुंथुं अरंच मल्लिं,
वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणंच।
वंदामि रिठ्ठ नेमिं,
पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

एवं मए अभिथुआ,
विहुयर यमला पहीण जर मरणा ।
चउवीसंपि जिणवरा,
तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तिय वंदिय महिया,
जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग बोहि लाभं,
समाहि वर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

चंदेसु निम्मलयरा,
आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर वर गंभीरा,
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

प्रगट लोगस्स कहने के बाद एक खमासमण देवे और कहे—"इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन वेसणो संदिसाउं"

फिर एक खमासमण देकर " इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन वेसणो ठाऊं" यह कह कर आसन विछावे। फिर एक खमासमण देकर " इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन सिज्झाय संदिसाऊं" कहे फिर एक खमासमण देकर "इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन सिज्झाय करूं" इतना कह कर आठ नवकार पढ़ना ।

जाड़े के दिनोंमें यदि कुछ ओढ़ने की आवश्यकता हो तो एक खमासमण देकर

'इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन पांगरणो संदिसाऊं' कहकर फिर एक खमासमण देकर इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन पांगरणो पाथरूं' इतना कहकर ओढ़ने के वस्त्र को ओढ़कर स्थिरता से बैठ जाना चाहिए। और शुद्ध भावना पूर्वक जाप, ध्यान करना चाहिये। सांसारिक वार्तालाप करना उस समय उचित नहीं। इति सामायिक लेने की विधि संपूर्णम।

अथ सामायिक पारने की विधि।

सामायिक का समय (४८ मिनिट) पूरा हो जाय तब एक खमासमण देकर

इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं यह कहे और उकडूं बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहे। फिर एक खमासमण देकर इ० सं० भ० सामायिक पारूं, कहे और फिर एक खमासमण देकर "इ० सं० भ० सामायिक पारेमि, कह कर अर्धनम्र होकर दाहिना हाथ स्थापनाचार्य जी के सन्मुख करके तीन नवकार गुणे। सामायिक करते समय ३२ दोषों में से (१० मन के, १० वचन के, १२ काया के) कोई दोष न लगे ऐसा चिन्तवन करे। फिर णमो अरिहंताणं' कहकर काउसग्ग पारे।

घुटनों के बल बैठकर चरवले पर दाहिना हाथ रक्खे और दाहिने हाथ पर मस्तक रखकर बांए हाथ में मुहपत्ती रखके नीचे लिखी गाथा पढ़े ।

सामयिक पारने की गाथा ।

भयवं दंसण भद्दो,
सुदंसणो थूलिभद्द वइरोय ।
सफलीकय-गिहि चाया,
साहू एवं विहा हुंति ॥ १ ॥
साहूण वंदणेणं,
नासइ पावं असंकिया भावा ।
फासुअ-दाणे निज्जर,
अभिग्गहो नाण माईयं ॥ २ ।

छउ मत्थो मूढ़ मणो,
कित्तिय मित्तिपि संभरइ जीवो ।
जंच न संभरामि अहं
मिच्छामि दुक्कड़ं तस्स ॥ ३ ॥

जं जं मणेण चिंतिय-
मसुहं वायाइ भासियं किंचि ।
असुहं काएण कय
मिच्छामि दुक्कड़ं तस्स ॥ ४ ॥

सामाइय पोसह संठियस्स
जीवस्स जाइजो कालो ।
सो संफलो बोद्धव्वो
सेसो संसार फल हेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधेंलीधुं विधे कीधूं विधि करतां जो कोई अविधि आशातना लागी होय, दश मन के, दश वचन के, बारह काया के एवं प्रकारे ३२ दूषण में जो कोई दूषण लगा होय सो सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

. .

यह गाथा कह कर सामायिक पारे। यहां इतना बतलादेना जरूरी है कि सामायिक में यदि किसी प्रकार से सचित्त वस्तु तथा बिजली आदि का संघट्टा हुआ होय तो इरियावही कह कर एक लोगस्स अथवा चार नवकार का काउसग्ग कर

के प्रगट लोगस्स कहे फिर ३२ दोषों का चिन्तवन करके सामायिक पारे अन्यथा इरियावही करने की आवश्यकता नहीं है। इति ॥

अथ भावपूजा करने की रीति।

श्रीजिन मन्दिर में जाकर निसीहि कहकर मूल गंभारे की तीन प्रदक्षिणायें दें। पुरुष भगवान के दाहिनी ओर और स्त्री वाईं ओर कम से कम ६ हाथ की दूरी पर बैठकर नीचे लिखे अनुसार तीन खमासमण देवे।

अथ खमासमण।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं

जावणिज्जाए निसीहि आए मथ्थएण वंदामि।

फिर दाहिना घुटना जमीन पर और बायां उठा कर बैठे और इस प्रकार स्तुति करे।

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन चैत्य वंदन करूं ? इच्छं

अथ चैत्य वंदन।

सुवर्ण वर्ण गजराज गामिनं, प्रलंब बाहुं सुविशाल लोचनं। नरा मरेंद्रै स्तुत पाद पंकजं, नमामि भक्त्या रिषभं जिनोत्तमं ॥१॥

(इच्छानुसार और भी नये नये चैत्य वंदन पढ़ सकते हैं। इसके पश्चात् नीचे लिखे मूजब पढ़े)

अथ जंकिंचि ।

जंकिंच नाम तिथ्थं,
सग्गे पायालि माणु से लोए ।
जाइं जिण बिंबाइं,
ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

अथ शक्रस्तव

नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं, तिथ्थयराणं, सयसं

बुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-
हाणं, पुरिसवर पुंडरीयाणं, पुरिसवर
गंध हत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं, लोग
नाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं,
लोगपज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं
चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं
बोहिदयाणं, ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्म-
देसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसार
हीणं, धम्मवरचाउरन्त चक्कवट्टीणं
॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण दंसण
धराणं, विअट्ट छउमाणं ॥ ७ ॥
जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं

॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसिणं, सिवमयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वा· वाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमोजिणाणं, जिअभ- याणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा, जे अभविस्संतिणागएकाले, संपइअ वट्ट- माणा, सव्वेतिविहेणवंदामि ॥ १० ॥

॥ अथ जावन्त चेइआइं ॥

जावन्तचेइआइं, उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह सन्तो तथ्थ संताइं ॥ १ ॥

॥ अथ जावंत के विसाहू ॥

जावंत के विसाहू, भरहेरवय महा-
विदेहे अ। सव्वेसिंतेसिं पणओ, तिवि
हेण तिदंड विरयाणं ॥

॥ अथ परमेष्टि नमस्कार ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्व
साधुभ्यः ॥

(नोट—स्त्रियों को इसकी जगह एक
नवकार पढ़ना उचित है)

॥ अथ उवसग्गहर स्तोत्र ॥

उवसग्गहरं पासं २ वंदामि कम्म-

घण मुक्कं। विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जोसया मणुओ। तस्सग्गहरोग मारी, दुठ्ठ जराजंति उव-सामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलोहोइ। नरतिरिए सुविजीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्तेलद्धे चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअसंथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। तादेव दिज्जबोहिं; भवेभवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

(इसके बाद और कोई स्तवन पढ़ना हो तो पढ़ सकते हैं)

(स्तवन पढ़ने के बाद दोनों हाथ जोड़ मस्तक से लगाय जय वियराय पढ़े)

॥ अथ जयवियराय ॥

जयवियराय जगगुरु, होउममं तुह पभावओ भयवं, भवनिव्वेओ मग्गाणु सारिआ इट्ठफल सिद्धी । लोग विरुद्ध-च्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणंच सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभव मखंडा ॥

॥ अथ अरिहंत चेइयाणं ॥

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं ॥१॥
वंदणवत्तियाए पूअणवत्तियाए स-
क्कार वत्तिआए सम्माण वत्तिआए
बोहिलाभ वत्तियाए निरुवसग्ग वत्ति-
याए ॥ २ ॥ सद्धाए, मेहाए धीइए
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि-
काउसग्गं ॥ ३ ॥

(अब खड़े होकर)

अन्नथ्थ उससिएसं का पाठ बोले

(और फिर एक नवकार का कायो-
त्सर्ग करे काउसग्ग पूरा हो जाने पर

'नमोअरिहंताणं' कह कर पारना और नमोऽर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः बोल कर नीचे लिखी स्तुति पढ़े)

अश्वसेन नरेसर वामा देवी नंद,
नवकरतनु निरुपम नील वरण सुखकंद।
अहि लचण सेवित पउमा वइ धरणिंद,
प्रह ऊठी प्रणमूं नित प्रति पास जिणंद॥

फिर जब श्री जिन मंदिर से लौटे तब जो कोई आशातना भूल से जानते अजानते होगई हो उसके लिये "मिच्छामि दुक्कडं" दे। तीनबार आवस्सहि कहे।

भाव पूजा की विधि सम्पूर्णम्॥

श्रीमहावीर चरित्र

(हिन्दी भाषा में शीघ्र ही प्रकाशित होगा)

यदि आप लाखों मनुष्यों को तारने वाले, अहिंसा की विजय दुंदुभी बजाने वाले, दुःखी संसार को सच्चा मुक्ति मार्ग बताने वाले, जैनियों के चौवीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के पवित्र जीवन का हाल जानना चाहते हों तो अभी से ग्राहक श्रेणी में नाम लिखवा दीजिये।

पताः—जवाहरलाल लोढा,
मोतीकटरा—आगरा।